

बांग्लादेश

वह वास्तुकार, जिसने नावों पर स्कूल बनाए

जब बाढ़ ने गाँवों को काट दिया, तब एक बांग्लादेशी वास्तुकार ने तैरते स्कूल बनाए, जो बच्चों तक नाव से पहुँचते हैं।

कहाँ नाटोर, उत्तर-पश्चिम बांग्लादेश

कौन मोहम्मद रेज़वान, एक वास्तुकार जिन्होंने तैरते स्कूल बनाए

कब 1998 से 2018

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

मोहम्मद रेज़वान बांग्लादेश के एक नीचे, समतल इलाक़े में पले-बढ़े। हर साल मानसून की बारिश बाढ़ लाती थी। सड़कें पानी में डूब जाती थीं। गाँव बाक़ी दुनिया से कट जाते थे।

बचपन में उन्हें बाढ़ के दिनों में स्कूल पहुँचना मुश्किल लगता था। उनके परिवार के पास एक छोटी नाव थी, जो उन्हें ले जाती थी। उनके कई दोस्त और रिश्तेदार स्कूल नहीं पहुँच पाते थे। कुछ ने हमेशा के लिए पढ़ाई छोड़ दी।

एक अलग सवाल

रेज़वान वास्तुकार बने, यानी इमारतों का नक़्शा बनाने वाले। वे अपने इलाक़े में स्कूल और अस्पताल बनाना चाहते थे। लेकिन वहाँ की इमारतें मानसून में अक्सर पानी में डूब जाती थीं।

तब उन्होंने एक नया सवाल पूछा। अगर स्कूल ही बच्चों के पास आ जाए तो? 1998 में उन्होंने अकेले शुरुआत की, लगभग $500 और एक कंप्यूटर के साथ। पहली स्कूल-नाव बनाने में उन्हें चार साल लगे।

> अगर बच्चे आने-जाने का साधन न होने से स्कूल नहीं जा सकते, तो स्कूल ही उनके पास जाने चाहिए।
>
> मोहम्मद रेज़वान, NPR में उद्धृत

1998	2002	23
वह साल जब उन्होंने लगभग $500 से शुरू किया	वह साल जब पहली स्कूल-नाव चली	2018 में स्कूल-नावें

नदी किनारे स्कूल

स्थानीय कारीगर उनके नक़्शे से, स्थानीय सामान से, ये नावें बनाते हैं। हर नाव में एक कक्षा और एक ब्लैकबोर्ड है। कंप्यूटर सोलर पैनल से चलता है, जो धूप को बिजली में बदलते हैं।

हर सुबह नाव नदी के किनारे-किनारे जाती है और बच्चों को बिठाती है। कक्षा पूरी होने पर वह किनारे पर रुकती है। फिर पढ़ाई शुरू होती है। बाद में नाव बच्चों को घर छोड़ देती है।

नावों पर वही विषय पढ़ाए जाते हैं जो ज़मीन के स्कूलों में। रेज़वान कहते हैं कि एक और फ़ायदा है। कई माँ-बाप को उन लड़कियों की फ़िक्र रहती है जो स्कूल तक दूर पैदल जाती हैं। जब स्कूल दरवाज़े पर आ जाता है, तो ज़्यादा लड़कियाँ जा पाती हैं।

उनका संगठन तैरते क्लिनिक और तैरती लाइब्रेरी भी चलाता है। सारी सेवाएँ मुफ़्त हैं। 2005 में बिल और मेलिंडा गेट्स की शुरू की हुई एक संस्था ने संगठन को $1 *million* का पुरस्कार दिया।

एक नाव पर 8 साल की नीला ख़ातून अपनी कक्षा को छह का पहाड़ा बुलवाती है। उसकी माँ कहती है कि नाव न होती तो नीला शायद स्कूल में न होती। परिवार में कोई कॉलेज नहीं गया। उसकी माँ कहती है कि नीला डॉक्टर बनेगी।

कब क्या हुआ

- **1998** वे लगभग $500 से एक छोटा संगठन शुरू करते हैं।
- **2002** पहली स्कूल-नाव चलती है।
- **2005** संगठन को $1 million का पुरस्कार मिलता है।
- **2018** वह 23 स्कूल-नावें चला रहा है (NPR)।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

ज़्यादातर स्कूल बच्चों के आने का इंतज़ार करते हैं। ये स्कूल जाकर उन्हें लेते हैं।

एक वास्तुकार ने स्कूल की समस्या इमारत से नहीं, नाव से सुलझाई।

हमारी राय

उन्होंने बाढ़ से लड़ाई नहीं की। उन्होंने ऐसा स्कूल बनाया जो उसी पर तैरता है।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 जिसे आप तय मानते हैं, उसे बदलिए

वे बाढ़ वाली ज़मीन पर इमारत नहीं बना सकते थे। इसलिए उन्होंने पूछा कि स्कूल चल कैसे सकता है।

यह आज़माएँ: कोई एक समस्या लीजिए जिसमें आप अटके हैं। जिस चीज़ को आप तय मानते थे, उसे एक बार बदलकर सवाल दोबारा लिखिए।

2 बहुत थोड़े से शुरू कीजिए

उन्होंने 1998 में लगभग $500 और एक कंप्यूटर से शुरू किया।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते अपने विचार का सबसे छोटा रूप आज़माइए।

3 जो पास है, उसका इस्तेमाल कीजिए

स्थानीय कारीगर उनके नक़्शे से, स्थानीय सामान से, नावें बनाते हैं।

यह आज़माएँ: किसी पड़ोसी या सहकर्मी से पूछिए कि वह पहले से क्या बनाना जानता है।

4 असली रुकावट को दूर कीजिए

लंबा पैदल रास्ता असुरक्षित लगता था, इसलिए माँ-बाप लड़कियों को घर रखते थे। दरवाज़े पर स्कूल ने यह हल कर दिया।

यह आज़माएँ: तीन लोगों से पूछिए कि उन्हें क्या रोकता है। फिर वही एक चीज़ ठीक कीजिए।

साथ ले जाने वाली एक बात

अगर बच्चा स्कूल तक नहीं पहुँच सकता, तो स्कूल को भेज दीजिए।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

NPR
'Floating Schools' Make Sure Kids Get To Class When The Water Rises (2018)

NBC News (from The Washington Post)
For flood-prone Bangladesh, a floating future (2007)

The Seattle Globalist
Boats bring school to Bangladesh families hit by regular flooding (2018)

तथ्य-जाँच नोट: तीनों स्रोत मुख्य कहानी पर सहमत हैं और ब्योरों में अलग हैं। Washington Post (2007) कहता है कि रेज़वान ने 1998 में एक नाव के साथ अपना संगठन शुरू किया; Seattle Globalist (2018) कहता है कि उन्होंने 1998 में लगभग $500 और एक कंप्यूटर से शुरू किया, पहली नाव बनने में चार साल लगे और वह 2002 में चली; NPR भी पहले स्कूल के लिए 2002 बताता है। कहानी Seattle Globalist और NPR का अनुसरण करती है। बेड़े में 45 जहाज़ हैं, जिनमें लाइब्रेरी वाली नावें भी शामिल हैं (Washington Post, 2007), या 23 स्कूल-नावें (NPR और Seattle Globalist, 2018); कहानी स्कूल-नावों के लिए सिर्फ़ 2018 का आँकड़ा देती है। एक नाव में लगभग 30 बच्चे आते हैं (NPR, 2018) या लगभग 60 (Washington Post, 2007); कहानी कोई संख्या नहीं देती। Washington Post परियोजना को उत्तर-पूर्व में बताता है; NPR उसे उत्तर-पश्चिम में, अत्राई नदी पर बताता है, और कहानी नाटोर, उत्तर-पश्चिम बांग्लादेश कहती है (Washington Post के फ़ोटो-कैप्शन में भी नाटोर ज़िले का नाम है); नक़्शे का निशान नाटोर शहर पर है, किसी नाव-मार्ग पर नहीं। रेज़वान का उद्धरण NPR से है; Seattle Globalist ने उसी विचार को थोड़े अलग शब्दों में दर्ज किया है। 2005 का $1 million का पुरस्कार NPR और Washington Post दोनों में है। तैरते स्कूलों पर Wikipedia का पन्ना बड़े आँकड़े (100 से ज़्यादा नावें, 100,000 छात्र) देता है, जिन पर वह ख़ुद "उद्धरण चाहिए" का निशान लगाता है, इसलिए कहानी उनका इस्तेमाल नहीं करती। नीला की माँ की यह उम्मीद कि वह डॉक्टर बनेगी, NPR से कही गई उनकी अपनी बात है। आँकड़े 2007 और 2018 के हैं और बदल चुके हो सकते हैं। "हमारी राय" वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।